॥ श्री गणेशाय नमः ॥

श्री गणेश जी की आरती

परंपरागत; अंतिम पद में 'सूर श्याम' — सूरदास जी की छाप मानी जाती है

जय गणेश जय गणेश जय गणेश देवा।
माता जाकी पार्वती पिता महादेवा॥

एक दंत दयावंत, चार भुजा धारी।
माथे सिंदूर सोहे, मूसे की सवारी॥
॥ जय गणेश जय गणेश… ॥

पान चढ़े फूल चढ़े, और चढ़े मेवा।
लड्डुअन का भोग लगे, संत करें सेवा॥
॥ जय गणेश जय गणेश… ॥

अंधन को आँख देत, कोढ़िन को काया।
बाँझन को पुत्र देत, निर्धन को माया॥
॥ जय गणेश जय गणेश… ॥

'सूर' श्याम शरण आए, सफल कीजे सेवा।
माता जाकी पार्वती, पिता महादेवा॥
॥ जय गणेश जय गणेश… ॥

दीनन की लाज रखो, शंभु सुतकारी।
कामना को पूर्ण करो, जाऊँ बलिहारी॥
॥ जय गणेश जय गणेश… ॥

॥ बोलो श्री गणेश की जय ॥